पंडित दीनदयाल जी के पर्यावरणीय सतत विकास परिकल्पना का एकात्म चिंतन

अभिषेक भारद्वाज, अभिषेक शुक्ला, के.एन.उत्तम, राम गोपाल
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

भारत की पावन भूमि पर समय–समय पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है। जिन्होंने समय–समय पर हमारे देश की दशा और दिशा को नया रुप दिया हैं। भारत जैसी पावन भूमि पर सितम्बर 1916 को पंडित दीनदयाल जैसे महापुरुष ने जन्म लिया, जो एकात्म मानववाद व अंत्योदय के प्रणेता थे। तीन वर्ष की आयु में ही इनके सर से पिता का साया उठ गया तथा सात वर्ष की आयु में ही माता के प्यार से भी वचिंत हो गये। जिससे इनका सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय हो गया था। (1) इनके संस्कारों का विकास पूर्णतः उपस्थित पर्यावरण और प्रकृति की ही देन है। पंडित जी एक स्वंयसेवक के साथ–साथ दार्शनिक, अर्थशास्त्री इतिहासकार, पत्रकार भी थे। इन्होने राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने बताया था कि 'एकात्म मानववाद' मानव जीवन व सम्पूर्ण सृष्टि के बीच एक मात्र सम्बन्ध का दर्शन है। एकात्म को हम अविभाज्य या एकीकरण भी कह सकते है। इसका मतलब होता है एक समाज जहां किसी प्रकार का विभाजन न हो और एकता हो। मानववाद एक ऐसी विचारधारा है, जो मानव मूल्यों और उनसे सम्बधित मसलों पर ध्यान देती है। अतः वे समाज को बांट कर काम करने में कभी विश्वास नहीं रखते थे। सरलता से कहा जाये तो मानववाद एक भरोसा अथवा धारणा है, जो मानवता के प्रति लोगों को आकर्षित करती है। जहां एकात्म मानवदर्शन का अनुसरण किया जाता है, जहां लोग सिर्फ भाई चारे के साथ इकट्ठे होकर रहते हैं, ऐसे समाज में संघर्ष के लिए कोई जगह नहीं होती। वास्तव में इसी तरीके से पूरे विश्व में शांति, एकता, समता और बंधुता कायम हो सकती है। (2-4)

पंडित दीनदयाल जी के पर्यावरण के प्रति विचारों पर प्रकाश

सन् 1960 में अपने उत्कृष्ट व्याख्यान के दौरान उन्होंने कहा की मानव प्रकृति का संरक्षक होना चाहिए किन्तु जब मानव को प्रकृति पर विजय पाने की अकांक्षा होगी तो पर्यावरण अपना संतुलन खो देता है। यही नहीं सतत् विकास की संकल्पना दुनिया में सबसे पहले 1960 में की गई। 1987 में नार्वे के प्राधानमंत्री की अध्यक्षता में बनी कमेटी में इसी के सतत विकास के मॉडल को दोहराया गया जिसे हम 'ब्रेटलैण्ड कमीशन के सिद्धान्त' के नाम से जानते है। (5)

पंडित दीनदयाल जी ने बताया की व्यष्टि यानी व्यक्ति, समष्टि यानी समाज, परमाष्टि यानी परमात्मा का नाम ही मानव है। अतः इससे इस बात की पुष्टि होती है की मानव प्रकृति का एक हिस्सा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, रामशक्लः2005, द्वितीय संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002
2. राठौर, कुसुम लताः2009, प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001
3. राय, पारस नाथः2007, द्वादशम् संस्करण, "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–282002
4. सक्सेना, एन0आर0स्वरूपः2002, ग्यारहवाँ संस्करण "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001
5. सक्सेना, एन0आर0स्वरूप व शिखा चतुर्वेदीः2007, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001